।। ॐ श्रीपरमात्मने नमः।।

'हे नाथ !' पुकारकी महिमा

(ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी श्रीशरणानन्दजीजी महाराजके वचन)

'**मेरे नाथ**' से सुन्दर शब्द अपनी भाषामें नहीं हैं। -प्रेरणा पथ 165

'मेरे नाथ'– इस वाक्यका उच्चारण करते ही ऐसा हृदयमें भास होता है कि हम अनाथ नहीं हैं, कोई हमारा अपना है। और जो हमारा अपना है, वह कैसा है ? वह समर्थ है और रक्षक है। अब आप सोचिये कि समर्थ और रक्षकके होते हुए हमारे और आपके जीवनमें चिन्ता और भयका कोई स्थान ही नहीं रहता। -संतवाणी 8/35

'**मेरे नाथ**'– अब मेरे हैं, इसलिये प्यारे हैं। '**नाथ**' पदका प्रयोग मालूम है किसके लिये किया जाता है ? जो रक्षक हो और समर्थ हो। .....

'**मेरे नाथ**' वाक्यसे जो बोधार्थ निःसृत होगा, उसके तीन रूप होंगे– प्रियता, निश्चिन्तता और निर्भयता। यदि किसी भाई या बहिनके जीवन में निश्चिन्तता और निर्भयता है तो आप ही बताइये, इससे ऊँचा जीवन और क्या हो सकता है ? परन्तु ध्यान रहे, यह निश्चिन्तता और निर्भयता नासमझीसे भी होती है, और बेशर्माईसे भी होती है। बेशर्माईसे जो होती है, उसमें प्रियता नहीं होती, उसमें सुखासक्ति होती है। इसलिये निश्चिन्तता और निर्भयतासे पहले प्रियता अपेक्षित है।....

अगर हम औरंगजेब होते तो कहते कि '**मेरे नाथ**' वाक्यको हटाकर सब भाषाका नाश कर दो। औरंगजेब होते तो करते। लेकिन वह है नहीं भाई। उसका कहना था कि सच्चाई कुरानमें है, और ग्रन्थोंकी जरूरत क्या है ? कैसी अविचल आस्था ! .....

मैं तो लोगोंसे कहता हूँ कि यदि तुम्हारे दिलमें घबराहट हो और उस घड़ी कहीं तुम्हारे लबपर आ जाय– '**मेरे नाथ !**' तो आप सच मानिये, आपकी घबराहट नाश हो जायगी। उस क्षण यदि आपको याद आ जाय कि आप अनाथ नहीं, सनाथ हैं तो भय कैसे निवास करेगा ? भय तो अनाथके जीवनमें निवास करता है। जो सनाथ है, उसके जीवनमें भय कहाँसे आयेगा ? उसके जीवनमें नीरसता कहाँसे आयेगी ? वह असमर्थतासे पीड़ित क्यों होगा ? असमर्थतासे पीड़ित वही होगा, जो अनाथ है। नन्हा-सा बालक अपनी माँकी गोदमें क्या असमर्थताका अनुभव करता है ? -जीवन-दर्शन 1981/2-3

संकलनकर्ता– राजेन्द्र कुमार धवन

*)**=**=**(*

www.swamisharnanandji.org